विचार बिन्दु

उदय होते समय सूर्य लाल होता है और अस्त होते समय भी। इसी प्रकार संपत्ति और विपत्ति के समय महान पुरुषों में एकरूपता होती है।

–कालिदास

चिकित्सा प्रशिक्षण में एमसीआई की महत्वपूर्ण पहल

एक महत्वपूर्ण कदम उठाते हुए मेडिकल काउंसिल ऑफ इंडिया (एमसीआई) ने बैचलर ऑफ मेडिसिन एंड बैचलर ऑफ सर्जरी (एमबीबीएस) कार्यक्रम के पाठ्यक्रम में एक महत्वपूर्ण बदलाव किया है जो तत्काल प्रभाव से लागू भी हो गया है। राष्ट्रीय चिकित्सा आयोग के 'द अन्डर ग्रेजुएट मेडिकल एजुकेशन बोर्ड' ने स्नातक चिकित्सा शिक्षा नियम 2023 जारी किए हैं जो शिक्षा सत्र 2023-24 से लागू होंगे। इसमें पहले तीन सालों के लिए लक्ष्य निर्धारित होंगे। इस नए परिवर्तन के अनुसार भारत में सभी एमबीबीएस छात्रों को दाखिले के पहले दिन से ही अपने चिकित्सा प्रशिक्षण के हिस्से के रूप में एक परिवार को गोद लेना होगा। इस अभूतपूर्व पहल का उद्देश्य छात्रों को रोगी के स्वास्थ्य पर प्रभाव डालने वाले सामाजिक, आर्थिक और मनोवैज्ञानिक कारकों की व्यापक समझ प्रदान करना बताया गया है। एमबीबीएस पाठ्यक्रम के अनिवार्य घटक के रूप में परिवार गोद लेने की व्यवस्था शुरू करने का निर्णय इस मान्यता से उपजा है कि स्वास्थ्य की देखभाल अस्पतालों और क्लीनिकों की सीमा से परे भी फैली हुई है। छात्रों को परिवारों के साथ संबंध स्थापित करने की चिकित्सा शिक्षा में व्यवस्था करके देश में रोगी की देखभाल के लिए भावी चिकित्सकों को एक समग्र दृष्टिकोण देने की यह पहल की गई है। नए दिशानिर्देशों के तहत, प्रत्येक एमबीबीएस छात्र को एक परिवार सौंपा जाएगा जिसके साथ वे अपने चिकित्सा प्रशिक्षण के दौरान दीर्घकालिक संबंध विकसित करेंगे। छात्र उस परिवार के चिकित्सा इतिहास और उसकी सामाजिक व आर्थिक स्थितियों को ही नहीं समझ पाएंगे बल्कि स्वास्थ्य सेवाओं तक उन परिवारों के सदस्यों की पहुंच में आने वाली किसी भी चुनौती को समझने के लिए भी तैयार होंगे। छात्रों को यह अनुभव देने का उद्देश्य उनके नैदानिक कौशल को बढ़ाना और रोगी के संदर्भ के बारे में उनकी समझ को गहरा करना है। देश भर के मेडिकल कॉलेज इस परिवर्तनकारी बदलाव को लागू करने के लिए कमर कस रहे हैं, जिससे अनेकों को भारत में चिकित्सा शिक्षा में क्रांति आने की उम्मीद है। हालांकि इस पर संदेह करने वाले भी कम नहीं हैं। एमसीआई का मानना है कि नई व्यवस्था से एमबीबीएस पाठ्यक्रम के छात्र स्वास्थ्य देखभाल पर विभिन्न सामाजिक निर्धारकों के परिणामों को प्रत्यक्ष देख सकेंगे। उनकी अनुभवात्मक शिक्षा उन्हें मूल्यवान अंतर्दृष्टि देगी जिससे उन्हें और अधिक सहानुभूति वाले बेहतर चिकित्सक बनने में मदद करेगी। इस व्यवस्था के समर्थकों का मानना है कि परिवार गोद लेने का कार्यक्रम सैद्धांतिक ज्ञान और व्यावहारिक अनुप्रयोग के बीच की खाई को पाट देगा, जिससे स्वास्थ्य देखभाल अधिक रोगी-केंद्रित हो सकेगी। दूसरी ओर, इस व्यवस्था के आलोचक समय, संसाधनों के प्रबंधन, और छात्र-पारिवारिक संबंधों को बनाए रखने में आने वाली संभावित चुनौतियों का हवाला देते हुए, इस तरह के कार्यक्रम को बड़े पैमाने पर लागू करने की व्यवहार्यता पर प्रश्न उठाते हैं। इन आशंकाओं के चलते चिकित्सा शिक्षा के लिए इस नवीन प्रयोग के शुरुआती परिणामों का सभी को इंतजार रहेगा। कहा जा रहा है कि इसके सफल होने पर अपने चिकित्सा पाठ्यक्रम में समग्र रोगी देखभाल को शामिल करने के इच्छुक अन्य देशों के लिए परिवार गोद लेने की यह भारतीय पहल एक प्रतिमान प्रस्तुत कर सकती है। हालांकि कठोर एमबीबीएस पाठ्यक्रम के साथ इसका प्रबंध करना चुनौतीपूर्ण होगा।

चिकित्सा शिक्षा में सामुदायिक भागीदारी से छात्रों को जनता की जीवन स्थितियों का पता चलता है तथा ये परिस्थितियां किस प्रकार आम लोगों के स्वास्थ्य को प्रभावित करती हैं, उसकी भी समझ उनमें बनती है। मेडिकल छात्रों का अस्पतालों में मरीजों के रूप में जिन लोगों का सामना होता है उनके असली जीवन के हालात का सीधा अनुभव उन्हें सामुदायिक सहभागिता देती है। इससे छात्र यह भी समझ पाते हैं कि स्वास्थ्य के विभिन्न निर्धारक वास्तविक जीवन में रोगियों को कैसे प्रभावित करते हैं। चिकित्सा प्रशिक्षण में नए प्रयोग का दोहरा फायदा होगा। एक तरफ सामुदायिक जुड़ाव मेडिकल छात्रों को चिकित्सा की विशिष्टता देगा तो दूसरी तरफ उनके चिकित्सा संस्थानों की सेवाओं का लाभ भी लोगों के द्वार तक पहुंचेगा। मेडिकल छात्र से अपेक्षा की जाएगी कि वह जिस परिवार से जुड़े, उसके सदस्यों के स्वास्थ्य को समझे तथा संबंधित परिवार के स्वास्थ्य की देखभाल को बेहतर बनाने में मदद करे जिससे अंततोगत्वा समुदाय के स्वास्थ्य की देखभाल सुनिश्चित हो सके। इस व्यवस्था से सार्वभौमिक स्वास्थ्य कवरेज हासिल करने में भी मदद मिलने की अपेक्षा की जा सकती है। यह नई व्यवस्था अपनी चुनौतियां और अवसर दोनों साथ ले कर आई है। इसमें कोई शक नहीं कि प्रत्येक छात्र को परिवार आवंटित करके और पूरे स्नातक अवधि में लगातार संपर्क को बनाए रखते हुए इस कार्यक्रम को लागू करना एक बहुत ही चुनौतीपूर्ण कार्य होगा। इसके लिए नई व्यवस्था के कार्यान्वयन के प्रारंभिक चरण में कुछ चयनित संस्थानों में फीडबैक प्राप्त करना आवश्यक होगा जिससे कि संस्थानों की समुदायों तक पहुंच बनाने की व्यवस्थाओं का मूल्यांकन हो सके और उनके नतीजों से अन्य भी सीख सके। माना जा रहा है कि इस नई व्यवस्था का चिकित्सा शिक्षा पर कई मायनों में सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा। जैसे कि संपन्न वर्ग के छात्रों के लिए यह इसलिए उपयोगी होगा, क्योंकि वे जिस वर्ग से आते हैं उन्हें सामान्य मरीजों की पृष्ठभूमि के बारे में कोई जानकारी नहीं होती है। प्रत्येक छात्र को इस बारे में सोचेगा पड़ेगा कि वह मरीजों की सभी बाधाओं के संदर्भ में, उनकी सर्वोत्तम सहायता कैसे कर सकता है! नई व्यवस्था से छात्रों का अपने लोगों और अपने देश के लिए कुछ करने का जज्बा भी पैदा होगा जो उन्हें आमजन की सेवा के लिए प्रेरित करेगा। केवल यह सीखने के साथ कि परीक्षा के लिए महत्वपूर्ण विषय क्या हैं, छात्र यह भी जानेंगे और सीखेंगे कि वास्तव में महत्वपूर्ण स्वास्थ्य समस्याएं क्या हैं? भावी चिकित्सक प्रत्यक्ष जान पाएंगे कि आम जनता में स्वास्थ्य को लेकर कैसी भ्रांतियां बनी हुई हैं। ऐसे हालात में वे खुद कितने प्रासंगिक बन सकते हैं और लोगों के स्वास्थ्य को कैसे प्रभावित कर पाते हैं यह देखना दिलचस्प होगा।

नई व्यवस्था का चिकित्सा शिक्षा पर कई मायनों में सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा। जैसे कि संपन्न वर्ग के छात्रों के लिए यह इसलिए उपयोगी होगा, क्योंकि वे जिस वर्ग से आते हैं उन्हें सामान्य मरीजों की पृष्ठभूमि के बारे में कोई जानकारी नहीं होती है। प्रत्येक छात्र को इस बारे में सोचेगा पड़ेगा कि वह मरीजों की सभी बाधाओं के संदर्भ में, उनकी सर्वोत्तम सहायता कैसे कर सकता है!

अस्पताल का माहौल अलग होता है। वहां संचार एक डॉक्टर द्वारा नियंत्रित होता है और आम तौर पर वातावरण स्वाभाविक ही बहुत तनावपूर्ण रहता है। वहां केवल जरूरी बातें की जाती हैं। मगर गोद लिए परिवार में किसी भी विषय पर बात हो सकती है, यहां तक कि पड़ोसियों के स्वास्थ्य के बारे में भी गपशप संभव है। इससे चिकित्सा विद्यार्थी को तो लाभ होगा किन्तु कुछ लोग ऐसा भी सोचते हैं कि गोद लिए परिवार को शायद बहुत लाभ न हो क्योंकि विद्यार्थियों के पास बहुत सीमित ज्ञान होता है। इसलिए बहुतों को नहीं लगता कि इससे समुदाय को या सार्वभौमिक स्वास्थ्य कवरेज की उपलब्धि प्राप्त करने में बड़ी मदद मिलेगी। यदि परिवार के पास पहले से ही कोई विश्वसनीय डॉक्टर है, तो वे मेडिकल छात्र पर ध्यान नहीं देंगे। इस सच्चाई से इन्कार नहीं किया जा सकता कि देश में हेल्थकेयर कवरेज तेजी से बढ़ा है। ऐसी हालत में मध्यम वर्ग में तो हर कोई किसी न किसी डॉक्टर को जानता है। फिर भी ग्रामीण इलाकों में या कमजोर तबकों में यह व्यवस्था मूल्यवान साबित हो सकती है। इसे हमारी स्वास्थ्य सेवा प्रणाली के लिए एक नया चलन स्थापित करने के अवसर के रूप में भी देखा जा सकता है। इससे फैमिली डॉक्टर सिस्टम शायद वापस आ पाये और लोग सीधे ही विशेषज्ञों के पास भागना छोड़े। इस व्यवस्था के लिए संसाधनों की बात भी आएगी और चिकित्सा शिक्षा ले रहे छात्रों के परिवारों के साथ हेल-मेल से दोनों का एक-दूसरे पर क्या प्रभाव पड़ेगा यह भी भविष्य के गर्भ में है। चिकित्सा विद्यालयों में अब छात्रों की भर्ती का जो तरीका है उसमें उनको ऐसे राज्यों या इलाकों में सीट आवंटित हो सकती है जो उनकी अपनी भाषा वाली नहीं है। विद्यालय में तो अंग्रेजी में पढ़ाई हो जाती है, मगर छात्र जब उन इलाकों के परिवारों के साथ जुड़ेंगे तब भाषा की कठिनाई भी आएगी। यह भी सवाल पूछा जा रहा है कि स्कूलों से निकल कर एमबीबीएस के प्रथम वर्ष में भर्ती हुए किशोरों को मैदान में भेजा जाएगा तो क्या वे जिम्मेवारी संभाल पाएंगे? उन्हें अभी एक डॉक्टर होने का एहसास नहीं हुआ है। ऐसे में वे जनता का विश्वास कैसे जीत पाएंगे? नई व्यवस्था पर सवाल उठाने वालों का कहना है कि अगर छात्र सीखने जाएंगे तो इससे कोई फायदा नहीं होने वाला। यह ऐसा ही है जैसे किसी एनसीसी के कैडेट को युद्ध के मोर्चे पर भेज दिया जाय। दूसरी तरफ यह भी कहा जा रहा है कि चिकित्सा छात्रों के लिए सत्र का पहला दिन ही वह धारणा बनाने का सही समय होता है जिससे उन्हें अपने पूरे जीवन में निपटना है। चिकित्सा विज्ञान का जो ज्ञान छात्र हासिल करता है उसे नई व्यवस्था प्रासंगिक बनायेगी। नई व्यवस्था के समर्थक उचित ही कहते हैं कि जब चिकित्सा के छात्रों का प्रारंभिक क्लिनिकल एक्सपोज़र पहले वर्ष से ही होता है तब उन्हें प्रारंभिक सामुदायिक एक्सपोज़र क्यों नहीं दिया जा सकता? किन्तु नई व्यवस्था की सफलता के लिए मेडिकल कॉलेजों के संकाय सदस्यों को प्रशिक्षित किया जाना होगा ताकि वे छात्रों को पारिवारों को गोद लेने की प्रक्रिया को सहज लागू कर सकें और उनका उचित मार्गदर्शन कर सकें। भारतीय चिकित्सा परिषद् (एमसीआई) को इस नए पाठ्यक्रम के सफल क्रियान्वयन को सुनिश्चित करने के लिए इसकी प्रगति और प्रभावशीलता की बारीकी से सतत निगरानी करनी होगी तथा यह सुनिश्चित करना होगा कि नई व्यवस्था कर्मकांड बन कर न रह जाय।

–अतिथि संपादक,
राजेन्द्र बोड़ा
(वरिष्ठ पत्रकार एवं विश्लेषक)

उदयपुर जिले में कथौड़ी जनजाति के एक हजार तीन सौ पचास परिवार निवास करते हैं

पन्नालाल मेघवाल

वर्तमान में उदयपुर जिले की झाडोल एवं कोटडा तहसील के विभिन्न 28 गांवों में 1 हजार 350 परिवार निवास करते हैं। झाड़ोल तहसील के ओगणा में 180, कुकड़ा खेड़ा में 150, समीजा में 250, हथनी (पडावली कलां के पास) 50, कालिया घाटी 20, बिरोटी में 45, देवनवाड़ा (बिरोटी से ऊपर) 25, खराड़ी फला (नया गांव के ऊपर) 40, गामडी 15, जाड़ा पीपला 25, पानरवा 20, गुराड़ 100, सुरीमाला 50, काडा 50, हेवड़ा 5, मांडवा 10, केऊड़ी 15, जाड़ा आंकला 20, डैय्या 35, बूझा 100, अंबासा 25 एवं अंबावी में 30 परिवार निवास करते हैं। कोटडा तहसील के बेड़ादर में 10, लाडन (जुड़ा के पास) 40, कऊचा 5, तलई (मेरपुर से आगे) 20, धनुधर (कागवास के पास) 15 परिवार निवास करते हैं।

झाडोल तहसील के ओगणा गांव में 180 परिवार निवास करते हैं। यहां पर अधिकांश परिवार एक कमरा और बरामदे वाले पक्के घरों में रहते हैं। सरकार ने इन्हें पक्के घर इंदिरा आवास योजना एवं स्वच्छ परियोजना के तहत निर्मित कर उपलब्ध कराए हैं। सरकार की ओर से यहां मां-बाड़ी एवं आंगनबाड़ी संचालित है।

यहां से दस लोगों ने स्नातक तक शिक्षा ग्रहण की है। श्री सोहनलाल नायक यहां के मुखिया हैं। सोहनलाल ने स्नातक तक शिक्षा ग्रहण की है। वे ओगणा के उप सरपंच रह चुके हैं। उनका राजनीति में वर्चस्व है। उनके पिता श्री गणेशलाल नायक किराना की दुकान चलाते हैं। यहां के तीन परिवार व्यवसाय करते हैं। यहां के परिवारों का जीवन कृषि मजदूरी, लकड़ी के कोयले बनाना, बांस काटना आदि जंगलात के कामों पर निर्भर है।

कूकराखेड़ा गांव में 150 परिवार निवास करते हैं। यहां के मुखिया श्री कागूराम नायक है। यह दसवीं तक पढ़े लिखे हैं। इनके दो पुत्र एवं दो पुत्रियां हैं। सभी पढ़े लिखे हैं। यहां के पांच लोग स्नातक एवं पन्द्रह लोग बारहवीं तक पढ़े-लिखे हैं। यहां संचालित मां-बाडी में तीस बच्चे पढ़ते हैं। यहां के लोग कोयला बनाने के लिए जोधपुर, पाली एवं सिरोही जाते हैं। कुछ परिवार वन विभाग द्वारा लगाए जाने वाले पेड़ों के लिए खड्डा खोदने एवं वन विभाग की दीवार बनाने के कार्य में भी जुटे हुए हैं।

समीजा में 250 परिवार निवास करते हैं। यहां के अधिकांश परिवार आंवला प्रोसेसिंग कार्य में जुटे हुए हैं। यहां पर आंवले की एक बाडी है। इस बाडी में 200 आंवले के पेड़ हैं। यहां के परिवार इस बाडी से आंवले एकत्रित कर अपने घरों में लाते हैं। इन आंवलों को पानी में उबाल कर सुखा देते हैं। सूखे हुए आंवलों को बाजार में बेच देते हैं। यहां के परिवारों का जीवन यापन आंवला प्रोसेसिंग कार्य पर निर्भर है। पडावली के पास हथनी, कालिया घाटी, बिरोटी, देवनवाड़ा, खराड़ी फला, गामडी एवं जाडा पीपला परिवारों का जीवन यापन कोयला बनाने, लकड़ी और बांस काटने, खेती मजदूरी, मकानों में काम करने एवं लघु वन उपज पर निर्भर है।

गुराड़ गांव में 100 परिवार निवास करते हैं। सन् 1960 के दशक में महाराष्ट्र से नागजी, कासू, रामा, माहरु, गाऊ एवं सईलू आदि 6-7 परिवार गुराड़ में बसे थे। अब यहां 100 परिवारों की बस्ती हो गई है। अब कथौड़ी जनजाति के लोग पढ़ने लगे हैं। यहां से सीला पत्नी सज्जू नायक स्नातक है। मुन्नी पत्नी संजू दसवीं पास है। ये दोनों काडा मां-बाड़ी में अध्यापिकाएं हैं। काडा एवं सूरीमाला में 50-50 परिवार निवास करते हैं। यहां के अधिकांश लोग गुजरात, जालौर, सिरोही, पिंडवाड़ा क्षेत्रों में कोयला बनाने के कार्य में लगे हुए हैं। कोयला ठेकेदार के एजेंट उन्हें मजदूरी पर ले जाते हैं। ये लोग वहां बबूल की लकड़ी काटते हैं और भट्टी लगाकर कोयला बनाते हैं।

पानरवा, हेवड़ा, मांडवा, केऊड़ी, जाडा-आंकला, डैय्या, बुझा, अंबासा एवं अंबावी में निवास करने वाले परिवारों में से कुछ परिवार खेती-बाड़ी करते हैं। ये परिवार बकरियां और मुर्गियां रखते हैं। बाकी अधिकांश परिवारों का जीवन खेती में मजदूरी करने और लघु वन उपज पर निर्भर है।

कोटडा तहसील के बेडादर, लाडन, कऊचा, तलाई एवं धनुधर के परिवार बांस के हस्त उद्योग में संलग्न है। ये परिवार डागले (मचान) पर मक्का सुखाने के लिए बांस का टाटा बनाते हैं। झोपड़ी में लगाने के लिए बांस के दरवाजे, टोपले, टोपली, अनाज साफ करने के लिए सूपड़ा बनाते हैं। मछली पकड़ने के लिए बांस के पिंजरे बनाते हैं। बिछाने के लिए खजूर के पत्तों की दरियां बनाते हैं। इन परिवारों का जीवन जंगल से लकड़ियां एवं बांस काटने तथा लघु वन उपज पर आधारित है।

–पन्नालाल मेघवाल,
वरिष्ठ लेखक एवं स्वतंत्र पत्रकार

गीतांजलि यूनिवर्सिटी में दीक्षान्त समारोह-2023 आयोजित

- **डॉ. सुनंदा गुप्ता, डॉ. ए.के. गुप्ता एवं डॉ. अब्बास अली सैफी को उनके चिकित्सा क्षेत्र में योगदान के लिए सम्मानित किया**
- **एम.बी.बी.एस, फार्मेसी, नर्सिंग, डेंटल, फिजियोथेरेपी के 42 गोल्ड मेडल्स एवं 511 ग्रेजुएट्स, पोस्ट ग्रेजुएट व पी.एच.डी विद्यर्थियों को डिग्रीयां प्रदान की गई**

उदयपुर, (कासं)। गीतांजली यूनिवर्सिटी द्वारा दीक्षान्त समारोह-2023 का आयोजन यूनिवर्सिटी के स्व. नर्मदा देवी अग्रवाल ऑडिटोरियम में किया गया। दीक्षान्त समारोह के मुख्य अतिथि लोकसभा स्पीकर ओम बिरला, विशिष्ट अतिथि पूर्व एम्स डायरेक्टर पदम् डॉ. रणदीप गुलेरिया, गीतांजली ग्रुप के चेयरमैन व गीतांजली यूनिवर्सिटी के चांसलर जे.पी अग्रवाल रहे।

एग्जीक्यूटिव डायरेक्टर अंकित अग्रवाल ने बताया कि राजनीति के क्षेत्र में भारतीय लोकसभा स्पीकर ओम बिरला की समर्पण और योगदान, उनके नेतृत्व कौशल और सार्वजनिक सेवा के प्रति उनकी प्रतिबद्धता ने उन्हें अपने साथियों और घटकों के बीच सम्मान और मान्यता दिलाई है। लोकसभा अध्यक्ष के रूप में, वह भारत के संसदीय लोकतंत्र के कामकाज में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते रहे हैं। अंकित ने पदम् डॉ. रणदीप गुलेरिया की सराहना करते हुए कहा कि कोरोना महामारी के बाद से डॉ. रणदीप गुलेरिया हर घर में जाना-पहचाना चेहरा हैं। वह कोविड समय के दौरान नीतियों और क्लिनिकल प्रोटोकॉल के वास्तुकारहैं। भारत के कोविड-19 प्रतिक्रिया प्रयास का एक हिस्सा है। हम उनके आभारी हैं आम जनता के साथ-साथ चिकित्सा कर्मियों को उनके बेहतर स्वास्थ्य के लिए मार्गदर्शन किया। वह इसके लिए भारत सरकार के सलाहकार थे। उनके अडिग रवैये ने महामारी में भारतीय पत्रकारों के कई सवालों का सामना किया है। साथ ही अंकितजी ने और साथ ही कोन्वोकेशन के लिए एकत्रित हुए सभी विधार्थियों व उनके माता-पिता का भी स्वागत किया।

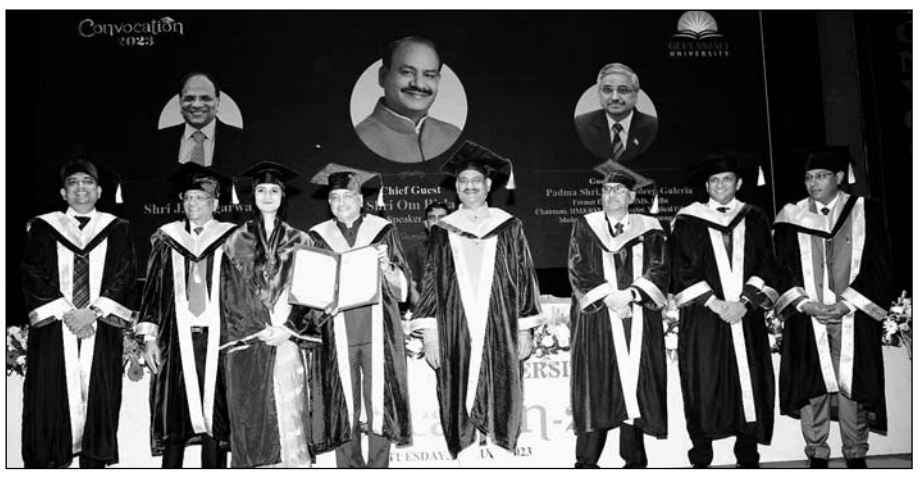

दीक्षान्त समारोह में लोकसभा स्पीकर ओम बिरला, विशिष्ट अतिथि डॉ. रणदीप गुलेरिया, गीतांजली ग्रुप के चेयरमैन व गीतांजलि यूनिवर्सिटी के चांसलर जे.पी अग्रवाल ने प्रतिभाओं को स्मानित किया।

मुख्य अतिथि लोकसभा स्पीकर ओम बिरला, विशिष्ट अतिथि पूर्व एम्स डायरेक्टर पदम् डॉ. रणदीप गुलेरिया, चांसलर जे.पी. अग्रवाल द्वारा गीतांजली यूनिवर्सिटी के एम.बी.बी.एस, फार्मेसी, नर्सिंग, डेंटल, फिजियोथेरेपी के 42 गोल्ड मेडल्स एवं 511 ग्रेजुएट्स, पोस्ट ग्रेजुएट व पी.एच.डी विद्यर्थियों को डिग्रीयां प्रदान की गई। साथ ही साथ ही तीन उपाधि से डॉ. सुनंदा गुप्ता, डॉ. ए.के. गुप्ता एवं डॉ. अब्बास अली सैफी को उनके चिकित्सा क्षेत्र में योगदान के लिए सम्मानित किया। गीतांजली यूनिवर्सिटी के चांसलर जे.पी अग्रवाल ने मुख्य अतिथि व विशिष्ट अतिथि को सप्रेम आभार प्रकट किया व विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि स्नातक अंत नहीं है, बल्कि एक लंबी यात्रा की शुरुआत है, इस यात्रा में, आपको समाज की भलाई के लिए विनम्रता और करुणा के साथ अपनी पेशेवर विशेषज्ञता प्रदान करने का प्रयास करना चाहिए। रोगियों का इलाज करते समय हमेशा इस बात का ध्यान रखें कि आप केवल शरीर का इलाज नहीं कर रहे हैं, बल्कि उनके स्वास्थ्य को लेकर उनके मन में जो चिंताएं और शंकाएं हैं, उनका भी इलाज कर रहे हैं। उनकी चिंता को कम करने का प्रयास करें और उन्हें आत्मविश्वास और आशा दें।

मातृ शिशु अस्पताल छह माह से बंद

चूरू में सामाजिक संगठनों का 17 दिन से धरना जारी

- **लोगों ने प्रदर्शन कर प्रसव सुविधा शुरू करवाने की मांग**

चूरू, (कासं)। शहर में गढ़ परिसर स्थित मातृ एवं शिशु अस्पताल पिछले छह महीने से बंद पड़ा है। इस अस्पताल में प्रसव सुविधा शुरू करवाने की मांग को लेकर पिछले 17 दिनों से चूरू एकता मंच के बैनर तले धरना प्रदर्शन किया जा रहा है। शहर के लोगों ने मंगलवार को गढ़ चौराहे पर एकत्रित होकर जिला प्रशासन व मेडिकल कॉलेज प्रशासन के खिलाफ जमकर नारेबाजी की। इसके बाद जिला कलेक्टर सिद्धार्थ सिहाग को ज्ञापन सौंपा।

चूरू एकता मंच के जिलाध्यक्ष विनोद राठी ने बताया कि मेडिकल कॉलेज के प्रिंसिपल ने गढ़ अस्पताल में महिला गायनिक डॉक्टर की कमी का हवाला देते हुये प्रसव व्यवस्था शुरू करवाने के लिए स्पष्ट मना कर दिया। इस मामले में सीएमएचओ सहित अस्पताल प्रशासन हाथ पर हाथ रखे बैठा है।

सामाजिक संगठनों के प्रतिनिधि 17 दिनों से धरने पर बैठे हैं। इस दौरान मंगतुराम चोटिया ने कहा कि इस अस्पताल के बंद होने से शहर के लोगों को काफी परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। सत्यनारायण व्यास ने बताया कि मेडिकल कॉलेज के आने के बाद गढ़ स्थित मातृ शिशु अस्पताल को बंद किया जा रहा है, जिसका शहर की जनता में भारी विरोध है। अगर समय रहते हुये अस्पताल को वापस शुरू नहीं किया गया तो बड़ा आंदोलन किया जाएगा और बाजार बंद किए जाएंगे। धरने में प्रेमचंद बगड़िया, एडवोकेट सुरेश कल्ला, कपिल चंदेल, कमल चोटिया, सुरेश सारस्वत, जय प्रकाश बरोड, सुशील शर्मा, पार्षद राकेश दाधीच, रवि दाधीच, दिनेश लाटा, संदीप पाटिल, गौरीशंकर पाटिल, नितेश ओझा व सुरेन्द्र पीपलवा आदि मौजूद थे।

आर.बी.आई. को भेजे नोटों में 100 रुपए के नकली नोट मिले

बीकानेर, (निसं)। यहां के रानी बाजार स्थित पंजाब नेशनल बैंक से रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया को भेजे गए पुराने नोटों में कई नकली और फर्जी नोट बरामद हुए हैं। दो अलग-अलग बंडल में सात-सात नोट फर्जी पाए गए हैं। इस संबंध में गांधी नगर जयपुर में मामला दर्ज कराया गया, जो अब कोटगेट थाने में शिफ्ट हुआ है।

आरबीआई की सहायक महाप्रबंधक तृप्ति तोसावरा ने एफआईआर में कहा है कि बीकानेर के रानी बाजार स्थित पंजाब नेशनल बैंक की ओर से भेजे गए गंदे और पुराने नोट में सौ रुपए के सात नकली नोट संदिग्ध मिले थे। इनकी जांच कराने पर ये नकली पाए गए हैं। इसी तरह एक और एफआईआर में भी ये ही आरोप लगाया गया है। एफआईआर जयपुर के गांधी नगर थाने में दर्ज करवाई गई, जहां से बीकानेर के कोटगेट थाने में शिफ्ट कर दी गई है। दोनों मामलों की जांच अब उप निरीक्षक राजेंद्र कुमार को सौंपी गई है। आरबीआई ने पहली बार किसी बैंक से नकली नोट प्राप्त होने का मामला दर्ज नहीं कराया है, बल्कि इससे पहले भी कई बैंकों में ऐसे नोट मिलते रहे हैं। बीकानेर में भारी संख्या में नकली नोट मिलते रहे हैं। यहां वृंदावन कॉलोनी के एक मकान से नकली नोट छापने के प्रिंटर सहित बड़ी राशि मिल चुकी है। इस संबंध में पुलिस ने गिरफ्तारियां भी की। आज भी कोटगेट थाने में इनकी जांच हो रही है। जिले में नकली नोट से संबंधित सभी मामले कोटगेट थाने में ही दर्ज होते हैं।

राशिफल बुधवार 12 जुलाई, 2023

पंडित अनिल शर्मा

प्रथम सावन मास (शुद्ध), कृष्ण पक्ष, दशमी तिथि, बुधवार, विक्रम संवत 2080, भरणी नक्षत्र सांय 7:44 तक, धृति योग प्रातः 9:40 तक, वणिज करण प्रातः 6:06 तक, चन्द्रमा रात्रि 1:58 से वृष राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-मिथुन, चन्द्रमा-मेष, मंगल-सिंह, बुध-कर्क, गुरू-मेष, शुक्र-सिंह, शनि-कुम्भ, राहु-मेष, केतु-तुला राशि में।

आज सर्वार्थ सिद्धि योग रात्रि 7:44 से सूर्योदय तक है। भद्रा प्रातः 6:02 से सांय 6:00 तक है। बुध उदय पश्चिम रात्रि 1:33 पर होगा।

सर्वश्रेष्ठ चौघड़िया: लाभ-अमृत सूर्योदय से 9:09 तक, शुभ 10:50 से 12:32 तक, चर 3:56 से 5:38 तक, लाभ 5:38 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 12:00 से 1:30 तक। सूर्योदय 5:45, सूर्यास्त 7:20

मेष
अपने अति आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। आवश्यक कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। चलते कार्यों में प्रगति होगी।

वृष
मित्रों/रिश्तेदारों के कारण समय खराब हो सकता है। अनावश्यक धन खर्च होगा। मानसिक तनाव बना रहेगा। धार्मिक कार्यों पर धन खर्च हो सकता है। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

मिथुन
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक सफलता से मनोबल ऊंचा रहेगा। घर-परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी।

कर्क
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। नौकरीपेशा व्यक्तियों को उच्चाधिकारियों से सहयोग मिलेगा।

सिंह
शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं। शुभ कार्यों को टालना ठीक रहेगा। बनते कार्य बिगड़ने का भय बना रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी।

कन्या
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। बनते कार्य बिगड़ने का भय बना रहेगा। यात्रा में दुर्घटना का भय बना रहेगा। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

तुला
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे।

वृश्चिक
विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अनहोनी की आशंका से बना हुआ मन का भय समाप्त होगा। घर-परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा।

धनु
परिजनों के व्यवहार के कारण मन खिन्न हो सकता है। महत्वपूर्ण मामलों में दुविधा बनी रहेगी। भावनात्मक कारणों से परेशानी का सामना करना पड़ सकता है।

मकर
घर-परिवार में वाद-विवाद टालना ठीक रहेगा। परिवार में मानसिक तनाव बना रहेगा। महत्वपूर्ण मामलों में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक नहीं रहेगी।

कुंभ
व्यावसायिक कार्यों से संबंधित वार्ता सफल रहेगी। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे।

मीन
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक मामलों में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।